ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

(A UGC-recognized Peer-reviewed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year-46 • Vol. 181-182 • Issue: January-June, 2019

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
A University dedicated to Oriental Studies & Human Values
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Scanned by CamScanner

Tulsī Prajñā

Contents

Āgama

Ācārya Mahāprajña 5

Articles

व्याख्या साहित्य में नपुंसक की अवधारणा 15
प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा

भगवतीसूत्र में प्रतिपादित धार्मिक उदारता 24
प्रो. प्रेमसुमन जैन

'*Skambha*' and '*Jyeṣṭha-brahman*' in the *Atharvaveda-saṃhitā*: Vedic Cosmogony towards Vedantic Theory 34
Dr. Gargi Bhattacharya

दशवैकालिक सूत्र की टीकाओं में वर्णित जीवन प्रबंधन के सूत्र 46
डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा

Effect of Prolong Fasting on Human Health (Part II) 65
Dr Pratap Sanchetee

Definition and Boundaries of Knowledge in Logical Positivism and *Advaita Vedānta* Theory 79
Gurumukh Singh

Scanned by CamScanner

दशवैकालिक सूत्र की टीकाओं में वर्णित जीवनप्रबंधन के सूत्र

Tulsī Prajñā
46 (181-182)
ISSN : 0974-8857

डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा*

सारांश

मनुष्य अपने जीवन में विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अपनी शक्तियों को प्रभावी ढंग से नियोजित करता है और अपने जीवन को संतुलित एवं व्यवस्थित बनाये रखता है, यही जीवन-प्रबंधन कहलाता है।जैन आगमों में दशवैकालिक सूत्र मुनि–जीवन से संबंधित है। इसमें जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। उसके टीका ग्रंथों में जीवन को सम्यक् प्रबंधित करने वाले अनेक सूत्र मिलते हैं। टीका ग्रंथों में समय–प्रबंधन, शरीर–प्रबंधन, अभिव्यक्ति–प्रबन्धन, तनाव–प्रबंधन, पर्यावरण–प्रबंधन आदि प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में प्राप्त होते हैं। वर्तमान जीवन शैली में प्रबंधन विविध रूपों में प्रस्तावित है।आगम व टीकाकालीन समय में भी वे सूत्र प्राप्त होते हैं, जो विभिन्न रूपों में उल्लिखित है। इसी श्रृंखला में अर्थ प्रबंधन भी आवश्यक है जो जीवन का अनिवार्य अंग है। इस प्रकार, जीवन प्रबंधन के अनेक सूत्र दशवैकालिक टीका में मिलते हैं, जिन्हें इस लेख के द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुख्य शब्द–दशवैकालिक, दशवैकालिक–टीका, प्रबंधन, अभिव्यक्ति।

* डॉ समणी भास्कर प्रज्ञा, सहायक आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

Scanned by CamScanner